पद ३७

(राग: खमाज - ताल: त्रिताल)

गोड।।ध्रु.।। विपरीता चरणीं रत हें बहु। लागली तुजसी खोड।।१।।

परस्त्री धन सुत यास्तव मीपणीं। करिसी अतिशय झोड।।२।।

श्रीगुरुभक्ति वैराग्य साधनीं। ठेवी अंतरांत ओढ।।३।। निशिदिनिं

मनोहर प्रभुपद्युगला। लागीं तूं कर जोड।।४।।

घे रे मना विषयांपासुनी मोड। लागो तुज माणिक नाम बह